MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA®

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में

स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

74) समकालीन हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना
रामेश्वर महादेव वाढेकर, औरंगाबाद ||184

४. नाटक विधा

75) समकालीन हिन्दी नाटक साहित्य में स्त्री-चेतना
डॉ. लव कुमार, पूर्णिया ||187

76) सुशीला टाकभौरे के नाटक में दलित जीवन की कारुणिक दास्तान
डॉ. प्रिया ए., कोट्टयम ||194

77) मोहन राकेश के 'आधे-अधूर' में स्त्री-चेतना
प्रा. डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार, नांदेड ||196

78) 21 वी सदी के प्रथम दशक के नाटकों में स्त्री चेतना
डॉ. संजयकुमार शर्मा, जलगांव ||198

79) आत्मकथा पाषाणी की- डॉ. सुरेश शुक्ल चन्द्र पृ. ८३
डॉ. भगवान जाधव, नांदेड ||201

80) सुनो शेफाली नाटक में नारी विद्रोह
डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे, परभणी ||204

81) सुनो शेफाली नाटक में स्त्री चेतना
प्रा.डॉ. पी. एम. भुमरे, नांदेड. ||207

82) समकालीन हिन्दी नाटक साहित्य में स्त्री चेतना के लिए प्रस्तुत शोधालेख नाटक 'कोमलगांधार' ...
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी, उस्मानाबाद ||210

83) समकालीन हिंदी नाटकों में 'सामाजिक समस्याएँ'
प्रा. स्मिता हनुमंतराव नायक, नांदेड ||212

84) "समकालीन नाटको में उच्चवर्गीय नारी"
प्रा. कु. अर्चना शरदराव कांबळे, हिंगोली ||214

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

है। कुलवंश का उसने यह बता दिया की वह भी प्रतिशोध ले सकती है। वह पतिव्रता तो बनती है लेकिन उसके इस व्यवहार ने सबके मन में स्वयं के अपराध की भावना को भी उत्पन्न करा दिया है। 'कोमलगांधार' में गांधारी के चरित्र को एक नया अयाम देने का प्रयास नाटककार ने किया है।

खजुराहो की शिल्पी :

'डॉ.शंकर शेष' का यह महत्वपूर्ण नाटक है। इस नाटक में 'शेष' ने प्राचीन देश के इतिहास के शिल्प खजुराहों के मंदिर की कहानी प्रस्तुत की है। मंदिर जो भारतीय संस्कृति के स्थापत्य कला का बेजोड नमूना है। उसके दर्शन कराये है। खजुराहों के मंदिर के बाहरी भाग में मिथुन मुर्तीयाँ है। और अंदर गर्भगृह में अवतारवादी भाव प्रस्तुत कर स्थापत्य का दर्शन कराया है। ये मूर्तियाँ और मंदिर कलाकारी का उदाहरण देते ही है। साथ ही विश्व निर्मिती और मानवीय वृत्तियों का दर्शन भी कराते है।

नाटक में अल्का, शिल्पी, राजा यशोवर्मन ऐसे पात्र है। जो मानवीय संवेदना की कहानी कहते है। 'अल्का' का शिल्पी के प्रति प्रेम भरा प्रस्ताव नाटक का महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन शिल्पी अपने अतीत के मोह के क्षण के कारण 'अल्का' के प्रति विमुख है। और वह अपने कर्तव्य को महत्वपूर्ण मानता है।

अल्का : स्त्री पात्र :

'डॉ. शंकर शेष' ने 'अलका' का पात्र एक तरह से समर्पित चित्रित किया है। 'अलका' राजा यशोवर्मन की कन्या राजकुमारी है। प्रमुख नायिका पात्र है। इसका चरित्र प्रभावशाली है। 'राजा यशोवर्मन' खण के मोह को जितने वाले मंदिर का निर्माण शिल्पी 'मेघराज आनंद' के हाथो से बनाना चाहते है। उसके लिए प्रतिदर्श के रुप में 'अलका' शिल्पी की मदद कर रही है। लेकिन उसके प्रेम में वह पड़ती है लेकिन शिल्पी को अब किसी प्रकार का मोह का प्रसंग बाँध नही पाता इसलिए 'अल्का' के सारे प्रयत्न विफल होते दिखाई देते है। वह समझती है की 'मेघराज आनंद' शिल्प पत्थर का काम करते करते उसका हृदय भी पत्थर का हो गया है लेकिन वह परिस्थिती से विमुख नही होती और डरती भी नही है। उसको विश्वास है की वह शिल्पी का दिल जीत लेगी पर अंत में वह आंतरिक जीवन में निराश्रित होकर एक प्रतिदर्श के समान निरर्थक बनकर रह जाती है।

'अल्का' का चरित्र पाठकों और दर्शकों के लिए सहानुभूति निर्माण करता है। अपने जीवन में प्रेम पथ की विफलता के कारण उसमें विराग निर्माण होते हुए भी समर्पित भाव से जी रही है।

'अल्का' शिल्पी को अनेकों बार प्रेम प्रस्ताव रखती है। हारकर वह मोह से दूर होने की कोशिश करता है। 'अल्का' कहती है। "तुम स्वार्थी हो शिल्पी, स्वार्थी तुम्हे मेरा आकार पसंद आया, तुमने मुझे सहस्त्रो मुद्राओं मे खडा किया बात बताओं शिल्पी हृदय में किसी बात की अनुभूति हुए बिना उसे आँखो में उतरना संभावना है। यह एक प्रेमहारी स्त्री का सात्विक आक्रोश नही है। उसका संघर्ष है। कि उसे ठिक से समझा क्यों नही गया।"

'अल्का' का चरित्र हताश और नैराश्य के कारण बैरागी हो गया है। वह अपने जीवन में जो चाहती उसको प्राप्त करने में असमर्थ है। उसके मानसिक दशा का चित्रण नाटककार ने नारी जीवन के प्रेम प्रस्ताव प्रसंग से जोड़ा है। जो सामान्य नारी की संवेदना है। वह कहती है "यह संसार तो कमजोर लोगों का है। गिरने-उठने-फिर गिरने वालों का है। यहाँ भूख लगती है। शरीर तपता है। इसलिए, शिल्पी अध्यात्म टूटने देर नहीं लगती संसार बड़ी कठिनाई से छूटता है ठीक है। मुझे अनन्त व्यथा भोगनी है। भोगूँगी।" इस प्रकार 'अलका' जीवन के विराग का एक मूर्त रूप बनकर सामने प्रकट होती है।

इसप्रकार से हम यहाँ देखते है। की शंकर शेष के इन नाटकों की स्त्री निराशा और हताशा का शिकार है। नारी के प्रति इसप्रकार का समाज का दृष्टिकोन उसके जीवन के प्रति किया हुआ एक आघात है। 'कोमलगांधार' की गांधारी जिसप्रकार से नाटककार नाटक में दिखाते है। इससे तो यह बात स्पष्ट होती है की नारी की अवहेलना होती रही है। उसको एक खाली जमीन समझा जाता रहा है। 'खजुराहो का शिल्पी' की अल्का अपने प्रेम भाव के समर्पन में असफल है। दोनो नाटकों में नारी को नाटककार ने प्रमुख रुप से प्रकाश में लाया है। ये नारीप्रधान नाटक है।

संदर्भ सूची :

१. शंकर शेष की नाट्यकला : डॉ.प्रकाश नारायण नाथव
२. शंकर शेष के नाटको में संघर्ष चेतना :- हेमंत कुकरेती
३. शंकर शेष समग्र नाटक खण्ड १ :- हेमंत कुकरेती
४. डॉ.विनय शंकर शेष रचनावली

❑❑❑

82

समकालीन हिन्दी नाटक साहित्य में स्त्री चेतना के लिए प्रस्तुत शोधालेख नाटक 'कोमलगांधार' और 'खजुराहो का शिल्पी'

प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी
हिन्दी विभाग,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

हिन्दी साहित्य की आधुनिक नाट्य विधा के महत्वपूर्ण नाटककार 'शंकर शेष' है उन्होंने साठोत्तरी नाटकों के लिए एक नई दिशा निर्माण की है। डॉ.शंकर शेष अपने समकालीन नाटककारों के साथ स्वातंत्र्योत्तर तीन दशकों की हिन्दी नाट्य धारा को बदलते युग संदर्भो को वहन करने मे सक्षम है। उन्होंने अपने समस्त नाटकों के माध्यम से लोकधर्मी तथा नाट्य धर्मी परम्पराओं को गौरवान्वित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक जीवन की विभिन्न स्थितियों का विविध कोनो से चित्रण करके नाट्यविद्या को संपन्न करने का बडा कार्य इन्होंने किया है। कला और रंगमंचीय स्थिति की दृष्टि से इनके नाटक विशिष्ट और श्रेष्ठ है।

'शंकर शेष' प्रतिभा संपन्न नाटककार थे हिन्दी साहित्य में उनको नाटक विद्या के धनी के रुप मे पहचाना जाता है। सन १९६० के बाद समकालीन साहित्य की प्रवृत्ति का बोलबाला शुरू था। उसमें आठवे दशक के अंतर्गत शेष जी की पहचान नाट्य जगत रही है। समकालीन नाटककारों में शिल्प, कथ्य, अभिनय, भाषा, संप्रेषण, इत्यादी के दृष्टि से प्रयोगधर्मी नाटककार के रुप में आप सिध्द हुए है रंगधर्मी नाटककार के रुप में शेषजी की पहचान रही है आधुनिक नाटककरों में 'शंकर शेष' प्रगतिशील लेखक है जिन्होंने नाटक और रंचमंच के संबंध में मौलिक रुप से विचार किया है नाटक, एकांकी, बालनाटक, उपन्यास, पटकथा आदि विधाओं मे अपने लेखन किया आपकी पहचान उन नाटककारों में कि जाती है। जिनसे नाटक विधा मजबूत बनगई इनमें डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जगदीश चंद. माथुर, विनोद रस्तोगी, दयाप्रकाश सिन्हा, ज्ञानदेव अग्निहोत्री आदि स्वातंत्र्योत्तर प्रयोगशील नाटककारों की श्रेणी में 'शंकर शेष' के रंगमंचीय कार्य को गिना जाता है। शंकर शेषने कुलमिलाकर २२ नाटक लिखे जिनमे १९ प्रकाशित नाटक है। इनके नाटकों का स्त्री चरित्र आदर्शवादी रहा है। इनके लगभग हर नाटक में स्त्री जीवन को इन्होंने बहुत महत्व दिया है। हम यहाँ इनके 'कोमलगांधार' और 'खजुराहो की शिल्पी' के स्त्री पात्र के संबंध में विचार कर रहे है।

'कोमल गांधार' :

नाटक में महाभारतकालीन विषय वस्तू को लेखक ने लिया है। इसकी कथा दो भागों में विभाजीत है। पूर्वार्ध्द में हस्तिनापुर और 'गांधारी' है। आरंम्भ में ही वही शोक प्रकट करती दिखायी देती है। उसको लगता है की मेरे साथ एक प्रकार का धोखा किया गया है। 'भीष्म' मुझे एक रानी के रुप केवल समझते है। इसलिए वह भरी सभा में ही शुरूवात में अपनी आँखो पर पट्टि बांधती दिखाई देती है। वह समझती है की उसके साथ अन्याय किया जा रहा है। 'धृतराष्ट्र' उसकी पट्टि को खोलने के लिए बार-बार प्रस्ताव दे रहे है लेकिन वह कामयाब दिखाई नहीं देते।

नाटक के उत्तरार्ध में 'गांधारी' और 'धृतराष्ट्र' की बातचीत को दिखाया गया है। बच्चे इनके बडे हो गए है। और युध्द के विषय को लेकर 'गांधारी' चिंतीत है।

'शंकर शेष' ने नारी की संवेदना को अपने नाटकों में अंकित किया है। नारी का आदर्शवादी रूप प्रस्तुत करते हुए उसको पूज्यनिय बताया है। वह अपनी महानता के कारण ही सबके लिए आदर्श का उदाहरण है। उसके साथ छल या कपट का व्यवहार किया जाए। तो वह भी उसका उत्तर दे सकती है। उनकी मानसिकता को समझते हुए समाज को व्यवहार करना चाहिए अन्यथा वह पापियों को दंड देने में भी पीछे नही हटेगी नारी की वेदना और निराशा को बडी मनोवैज्ञानिक पध्दति से नाटककार ने अपने नाटकों में चित्रित किया है।

नाटककार ने 'गांधारी' के मन के भीतर झाँककर उसकी सारी भावनाओं का अंकन किया है। इसके लिए नाटककार ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि को अपनाया है। उसके साथ किये जानेवाले बर्ताव के कारण उसका व्यक्तित्व परिवर्तीत हुआ है। वह 'भीष्म' के द्वारा प्रताडित नारी है। वह नही जान पाति के उसका पति अंधा है। 'संजय' और दासी से वह पूँछती है। अपने पति के बारें मे लेकिन उसको ठिक से कोई जबाब नही मिलता है। 'धृतराष्ट्र' के अंधेपन से वह अनजान है। और अपने भावी पति को लेकर वह ख्वाब देखती है हस्तिनापूर पहुँचने के बाद उसको पता चलता है की उसका पति अन्धा है। उसके पिता और भाई ने यह बात उसको नही बतायी इसीकारण वह अपने आँखों पर पट्टी बाँधती है। वह दिखाना चाहती है। की स्त्री केवल स्त्री नही है। उसपर अन्याय करने का असर क्या हो सकता